'उत्तरा' खंडकाव्यक कथानक

'उत्तरा' श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क खंड काव्य थिक। एकर कथानकक प्रसंग कविक कहब छनि "उत्तरा"क कथावस्तु महाभारतक विराटपर्व ओ द्रोणपर्वक किछु अंशसँ सम्बद्ध। प्रसंगतः किछु आनो प्रसंगकेँ स्पर्श करैछ। किन्तु काव्यमे कथाक रेखा मात्र लेल गेल अछि, रंग-टीप, काट-छाँट, वेश-परिवेश, रस-रीतिक अनुरूप स्वतः होइत गेल छैक। कला-कौशलकेँ ओज-दीप्तिमे, यौद्धिकताकेँ बौद्धिकतामे, शक्तिकेँ भक्तिमे परिणत करबाक दिशा कथावतरणक स्वाभाविक गतिवेगेँ प्रशस्त होइत गेल अछि।'[1]

कहबाक अभिप्राय ई जे उत्तरा' खण्डकाव्यमे कथा महाभारतक किछु अंशसँ सम्बद्ध रहितो एहिमे कविक मौलिक दृष्टि प्रखर भेल अछि। कवि अपन सूक्ष्म दृष्टिक प्रयोग कथानकक विस्तार हेतु सेहो कयलनि अछि।

अस्तु, आब कथानकपर दृष्टिपात कयल जाय। पाण्डव लोकनि द्यूत षड्यन्त्रमे पराजित भऽ गेलहाक पश्चात् बारह वर्ष बनवास आ' तदुपरान्त एक वर्षक अज्ञातवासक भागी भेल छलाह। ओहि अज्ञातवासक अवधिमे ओ लोकनि विराट राजाक ओतय छद्मवेशमे पहुँचलाह। युधिष्ठिर कंक नामसँ, भीम वल्लभ नामसँ, अर्जुन बृहन्तला नामसँ, नकुल ग्रन्थि नामसँ आ' सहदेव तंतिक नामसँ हुनका ओतय रहऽ लगलाह। द्रौपदीक नाम सैरन्ध्री राखल गेल। धरि कवि कतेक स्पष्टताक संग, बिनु नामक उल्लेख कयने पाण्डवक संग द्रौपदीक चित्र उपस्थित कयने छथि सेहो विशेष रूपसँ द्रष्टव्य थिक।

"पंच पुरुष छथि जनिक संगमे श्यामा ललना एक।
पंच तत्त्व जनु संगत एकत प्राण शक्तिहिक टेक॥
प्रथम प्रतिष्ठित पुरुष शान्त निर्मल जनु गगन उदार।
दोसर छथि उद्वेगी पवन समान शक्ति संचार॥
तेसर तेजस्वी जनु अग्नि-शिखा उद्दीप्त शरीर।
अपर युगल छथि धरणि-धारणा प्रकृति शीत जनु नीर॥

संग तनिक वनिता विलक्षणा चेतनाक जनु अंश।
आयल छथि विराट पुरुषक जनु सन्निधि जीव चिदंश ॥" २

राजा विराट मत्स्य जनपदक शासन करैत छलाह। हिनक राजधानी छल विराटनगर। ई जनपद केहन छल से कविक शब्दें—

'ई जनपद थिक मत्स्य, निरापद अछि पद-पद जन।
देश-कोश ई जकर उदेशें अवइछ गुनि जन ॥
जनक मनक हित विदित कसौटी, गुण सुवर्ण जत।
चमकि-दमकि होइछ मानक भूषणमे परिणत ॥" ३

हुनक पत्नीक नामक सुदेष्णा तथा पुत्रीक नामक उत्तरा छलनि। उत्तरा अत्यन्त सुन्दरी छलीह। उत्तराक रूपक स्वभावादिक वर्णन करैत कवि लिखने छथि—

"हँसितीहँ जकरा झहरि पड़ै अछि फूलक थोका।
तकितिहँ जकरा चमकि-चौंकि तड़पइ बिजलीका ॥
बजितहिँ जकरा बेणु-बिपंचिक हो झंकारे।
भृकुटि चढ़बितहिँ होय मदन-धनुषक टकारे ॥" ४

वृहन्नला नामधारी अर्जुन उत्तराक नृत्य-संगीतक शिक्षाक हेतु एवं सैरन्ध्री नाम धारिणी द्रौपदी रानी सुदेष्णाक दासी कार्यक हेतु नियुक्ति भेलीह। युधिष्ठिर जूआ खेलाकें राजाक मोन बहटारैत छलाह। भीम मनसियाकक काज पर नियुक्त भेलाह। उत्तराक बुद्धि तेहन तीक्ष्ण छलनि जे शीघ्र ओ नृत्य-संगीत सभ सीखि लेलनि। हुनक कलाप्रियताक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जा सकैछ—

"जतबा जे ललित कला संगीतक अंग-भूत।
गायन वादन-नर्तन अभिनय रस-भाव पूत ॥
सभ सिखा देल गुरु, शिष्या सहजहिँ सीखि लेल।
जनु व्यास-उक्ति गणपति द्रुत गतिएँ लीखि लेल ॥' ५

अर्थात् किछुए दिनमे सभ राग-रागिणी ओ सीखि लेलनि। नृत्य संगीतक प्रदर्शनक आयोजन भेल तखन हुनक विलक्षण प्रदर्शन देखि सभ मुग्ध भऽ गेल। कविक शब्दें—

"छथि स्वयं शिक्षके परीक्षहु विस्मित महान।
शिष्या देखि प्रतिभा मेधा धारणा ध्यान ॥
जनि पाबि घनोदय चर-चाँचर उर सस्य भीत।
उपदेश-बिन्दु उत्तरा-हृदयमे सिन्धु प्रमित ॥" ६

× + + ×

"शिष्या सुताक रहि रहि रानी छथि प्रशंसिका।
सैरन्ध्री गुरु-शिक्षणक साधुता दिस अधिका।

किछु शिष्य-शिक्षकक अद्भुत गुण-वैभव गुनइछ।
किछु सुधि-बुधि बिसरि कलानन्दक प्रवाह बहइछ।" ७

तथा प्रेमोपहारक वर्षा होबय लागल। एहि अवसपर दोसी वेशमे रहितहुं सैरन्ध्री नाम्नी द्रौपदी सेहो स्वयंकें नहि रोकि सकलीह। ओ अपन सासुक देल बहुमूल्य ग्रिमहार उपहारक रूपमे उत्तराकें दऽ देल। कविक शब्दें—

'ग्रिमहार नव उपहार कुमारिक हित विशेष॥" ८

एकर समक बाद जखन सन्ध्याक झोलफलमे सैरन्ध्री जा रहलि छलीह तखन एकटा अप्रत्याशित घटना घटित भऽ गेल। उत्तराक माम, राजा विराटक सार आ' रानी सुदेष्णक भाई कीचकक दृष्टि सैरन्ध्री पर पड़ल। दृष्टि पड़ितहि ओकरा हृदयमे काम वासना जाग्रत भेल। ओ साम, दाम, दण्ड, भेद सभ प्रकारक प्रयास कयलक। मुदा ओकर मनोकामना पूर्ण नहि भऽ सकलैक। तखन कीचक बलजोरी सैरन्ध्रीक शीलहरण करय चाहलक। धरि ओकरा सैरन्ध्री द्वारा अपमानित होबय पड़लैक। सुमनजीक शब्दें—

"सहसा तम गाठहि ठाढ़ रोकि पथ क्यो प्रचण्ड।
टोकल उद्धत किछु नर्म-नर्म स्वर खल अबण्ड॥
जनु मादाहत भुजङ्गिनी कृष्णा क्रोध - क्रूर।
फुफकारि फणा फटकारी झटकि चलि देल दूर॥" ९

तइयो जखन ओकर उपद्रव शान्त नहि भेलैक तँ भीम ओकर रातिमे बध कऽ देलनि। चारुकात इऐह बात चर्चाक विषय भऽ गेल जे कियक एहन शक्तिशाली योद्धा कोना आ' ककरा द्वारा मारल गेल। किछु लोक एहि दुर्घटनाकें दैवी उत्पात मानलक आ' किछु गोटेक मत छलनि जे कामुक कीचकक दृष्टि सैरन्ध्रीक रूप पर गरि गेल छल। ओकर मृत्यु ताही पापक फलस्वरूप भेलैक। रानी सुदेष्णा अपन छोट भाइक मृत्युसँ शोकाकुल भऽ एहि हेतु सैरन्ध्रीकें दोषी सिद्ध करैत छलीह। श्री सुमनजीक शब्दें।

"क्यो कहइछ ई थिक दैवि उत्पात।
बजइछ क्यो, कारण किछु आने बात॥
जहिएसँ आयलि सैरन्ध्री नारि।
कीचक कामुक रहले रूप निहारि॥
रखइछ मनमे पाप कामना नीच।
करय उपद्रव रनिवासहु बिच - बीच॥
कहलि चेताय सुदेष्णा रानी देखि।
गति विधि भाइक अनुचित - उचित परेखि॥

× ⊠ ×

रानी कहलनि 'हन्त कही अनुमानि।
कारण तोही अनर्थक, कही प्रमानि॥

हम बुझलहुँ रूपसि तोँ कुसुमक वृन्त ।
किन्तु आइ की नहि तों अहि - विषदंत ।।" १०

कीचक वधक वार्ता सुनिते पाण्डव लोकनि सशंकित भऽ गेलाह ओ लोकनि शंका उत्पन्न करय लगलाह जे कतहु पाण्डव लोकनि द्वारा ने तँ ई वध भेल अछि । एहि विषयक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु अपन बिशेष दूत विराटनगर पठाओल, घुरि कऽ गेलापर सम्पूर्ण वृत्तान्त कहि सुनाओल । ओ लोकनि निर्णय लेलनि जे यदि पाण्डव लोकनि विराटनगरमे होथि तँ हुनका सभकेँ देखार कऽ पुनः बारह वर्षक हेतु अज्ञातवासमे पठाओल जाय । एहि उद्देश्यसँ कौरव विराटनगर पर आक्रमण कयलनि । एम्हर श्वेतकेतु कहलथिन जे नीक सारथीक अभावमे हम युद्ध कोना करब ? तखन कंकक परामर्शपर वृहन्नलाकेँ सारथी बनाओल । वृहन्नला (अर्जुन) क युद्ध कौशलसँ राजा विराट विजयी भेलाह । सम्पूर्ण विराटनगरमे विजयोत्सव मनाओल गेल । कविक शब्दें—

"आइ विराटनगरमे विजयोत्सवकेर सब तरि रंग ।
कुरु-त्रिगर्त रण - प्रश्नक उत्तर मूल्यांकनक प्रसंग ।।
अछि सज्जित दरबार विराटक आमंत्रित समुदाय ।
नर - नारी आ - बाल-वृद्ध नागर-ग्रामीण निकाय ।।
आक्रमण विभीषिका जत छल तत उत्क्रमण हुलास ।
व्यक्ति-व्यक्तिमे शक्ति-प्रसक्तिक अछि अपूर्ण उल्लास ।" ११

तखन उत्तरकुमारक अभिनन्दनक सुर-सार शुरू भेल मुदा उत्तर कुमार सभ वस्तु स्थितिसँ राजाकेँ अवगत कराओल जे एहि युद्धक श्रेय तँ वास्तवमे वृहन्नलाकेँ छनि जे वस्तुतः अर्जुन छथि मुदा छद्मवेशमे एहि ठाम पाँचो भाई ओ द्रौपदीक संग उपस्थित छथि । तखन वृहन्नलाक संग पाण्डवक सम्मान कयल गेल आ किछुए दिन पश्चात् हुनका लोकनिक अज्ञातवासक अवधि समाप्त भेल ।

तत्पश्चात् राजा विराट अर्जुनक वीरता, रण-कौशल इत्यादि गुण देखि हुनका अपन जमाय बनबा हेतु प्रस्ताव राखल । मुदा अर्जुन कहल जे—

"शिष्या हमर कुमारि उत्तरा, पुत्री पद सबोधि ।" १२

धरि हुनक अनुरोधकेँ टारियो नहि सकलाह—

"पुत्रवधू रूपेँ अपनायब उचित-विहित अनुरोधि ।।" १३

अर्थात् हम पुत्रवधू रूपमे उत्तराकेँ अपनायब ।

एम्हर विवाहक बात सुनिते उत्तराक अंग-अंग पुलकित होबय लगलनि । हुनक मनःस्थितिक चित्रण करैत कवि लिखने छथि—

"उत्तराक अन्तरमे बजइछ शत-शत वीणा-रेणु ।
ससंकोच मन चढ़ा रहलि श्रद्धा सुमन गुरु पद रेणु ।।

अंग-अंग पुलकित प्रसंग सुनि दूराग संगीत।
कोनहु देवता पर चढ़बा लय पुलकित कली पिरीत ।।" १४

तखन अर्जुनक सुपुत्र, श्रीकृष्णक भागिनक संग उत्तराक विवाह सोल्लासपूर्ण वातावरणमे सम्पन्न भेल। हस्तिनापूरमे उपस्थित भऽ पाँचो भाई समस्त राज-पाट छोड़ि अपन निर्वाह हेतु पाँच गाम मात्रक माङ्ग कयलनि। मुदा कौरव सूचीकाग्र भरि भूमि हुनकालोकनिकेँ देबाक हेतु तैयार नहि भेलाह। फलतः महा भारतक भीषण आ' ऐतिहासिक युद्ध आरम्भ भेल। कतेकोक जान-माल गेल। तखन अपन संभावित पराजय देखि कौरव लोकनि चक्रव्यूहक रचना कयलनि। ओहि समयमे अर्जुन अन्यत्र युद्ध करैत छलाह। ई सभ चकव्यूहक तोड़ब जनैत नहि छलाह तेँ ई लोकनि चिन्तामग्न भऽ गेलाह मुदा युवा अभिमन्यु चक्रव्यूहक सातमे सँ छओ टा फाटक तोड़ब जनैत छलाह। तइयो अभिमन्यु फानि कऽ बाजि उठलाह—

"उठि हठिह अभिमन्यु उद्दीपित कहल, चिन्तान हो।
भेदि चक्रव्यूह प्रविशब. तात मन शंका न हो।।
व्यूह भेदन सह प्रवेशक ज्ञान विधि अछि कथ्यई।
किन्तु उपसंहार निर्गम बुझल नहि अछि, तथ्य ई।।" १५

आ' अभिमन्युक रणयात्राक तैयार होबय लागल। उत्तरासँ विदा मंगबा हेतु अभिमन्यू गेलाह। उत्तरा ई जनितो जे ई तँ सातमे सँ छओ टा मात्र चक्रव्यूह तोड़ब जनैत छथि, अपन कौलिक धर्मक निर्वाह करैत क्षत्राणीक परिचय देलनि, हुनका मस्तक पर तिलक लगा कऽ विदा कयलनि। सुमनजीक शब्दें—

"वचन गद्गद, हम सजल, उद्दाम प्रेमाकुल हृदय।
रण-तिलक चन्दन चढ़ाओल पतिक शिर उन्नत उभय।।
कहल पुनि, कय व्यूह भेदन फिरब विजय-श्रीयुते।
तखन पुनि भुज पुजब वीर ! प्रणाम अर्पित, विजयते।।

दुनूक तुलना करैत कवि कहि रहल छथि—

वीरताक प्रतीक प्रियतम, प्रियतमा वीरांगना।
विदा कयलनि तिलक केसरिया लगाय रणांगना।।
रोष रिपु प्रति, प्रिया प्रति उर प्रेम उद्वेलित कलित।
पतिक छल, पत्नीक मन वीरत्व-करुणा संकलित।।" १६

अभिमन्यु तखन चक्रव्यूह भेदन करबा हेतु विदा भऽ गेलाह। जेना मेघमे बिजलीका चमकैत छैक तहिना ई कौरवक व्यूहक बीच प्रवेश कयल। कविक शब्दें—

'जलद-पटलक बीच विद्युत चमकि चौंकावय जेना।
कुरुक व्यूहक बीच प्रविशल युवा सेनानी तेना।" १७

एतवे नहि, जेना सिंह-शावक (बच्चा) मृगा, शृगाल वराह, हाथीकेँ मारैत, छिन्न-भिन्न करैत

आगू बढ़ैत छैक, तहिना कौरव दलमे हाहाकार मचबैत अभिमन्यु चक्रव्यूह तोड़बा लेल आगू बढ़लाह। सुमन जीक शब्दें—

"वाण बर्षण, खड्ग कर्षण, गदा शक्तिक घूर्णना।
अस्त्र - शस्त्रक योजना, कय देल व्यूहक भंजना॥
सिंह-शावक जेना वन निर्भय घुमय घन गर्जना।
मृग शृगाल वराह गज जत जन्तु, करइत तर्जना॥
कयल सहज प्रवेश एकाकी अभय अभिमन्यु पुनि।
तूल तु ल शत्रुक अतुल सेबा तेना से देल धुनि॥" १८

किन्तु युद्ध स्थलमे जखन अभिमन्युक सारथी मारल गेल, स्वयं अस्त्र-शस्त्र विहीन भऽ गेलाह तँ कौरव दलक सात टा महारथी एके बेर आक्रमण कऽ हुनक बध कऽ देल।

अभिमन्युक अन्यायपूर्ण, धर्मविरुद्ध वधसँ समस्त पाण्डव दल शोकाकुल भऽ गेल। अन्तःपुरक व्यथा कथा अकथनीय भऽ गेल—

"सुभद्रा तन्द्रा पड़लि, कृष्णक उर करुणा सघन।
पृथा पृथके छथि व्याकुल, कुलकुटु बिनि जल नयन॥

आ' उत्तराक दशाक वर्णन करैत कवि लिखैत छथि—

"किन्तु जनी' सिंदूर सीमंतक स्यमंतक मणि लुटल।
उत्तरा निश्चेतना छथि, छिन्न तरुक लता टुटल॥
श्वास चलइछ आश तेँ जीवनक बुझि पड़ अनुमित।
विधि चिकित्सक बुझि व्यथा कयलन्हि व्यवस्था तदुचित॥ १९

तखन श्रीकृष्ण अन्तःपुर जाइत छथि हुनका भावी पुत्रक सुरक्षार्थ जीवन धारण करबाक प्रेरणा दैत छथिन। ओहो तहिना कयलनि। कविक शब्दें—

"पति-चिता चढ़ली न अन्तर्वती विमना।
पाण्डु कुल अंकुर जोगाबए जिबथि कहुना॥" २०

श्रीकृष्ण हुनका बहुत रास बोल भरोस दैत छथिन—

"अछि अहाँक दायित्व सर्वोपरि, सम्हारिअ उत्तरे।
वीर-पत्नी रहि बनिअ पुनि वीर-जननी वत्सले॥ २१

उत्तरा अपन पतिक रूप गुणक प्रशंसात्मक ढंगें कहैत छथि जे हुनक दिव्य प्रतिमाकें हम अपन हृदय-मन्दिरमे प्रतिष्ठित कऽ हुनक महिमाक गान करैत रहब, से श्रीकृष्णकें आश्वासन दैत छथिन कविक शब्दें—

"हृदय मन्दिरमे प्रतिष्ठित दिव्य प्रतिमा।
नित चढ़ा प्रेमाश्रु गायब हुनक महिमा॥
रूप बल वैभव चरित-गुण-शी अनुपमा
स्मरण मणिसँ सजायब जीवनक क्षण हम॥" २२

ई सूनि श्रीकृष्ण गद्‌गद भऽ उठैत छथि आ' हुनका भावी सन्तानकेँ आशीर्वाद दैत कहि उठैत छथि—

"जकर अहाँ अभिभाविका, तकर भविष्य प्रसिद्ध।
दीक्षित करिअ परीक्षिते, परम भागवत सिद्ध॥
परम भागवत सिद्ध प्रसिद्धे होथु परीक्षित।
शुक मुख सुनि शुभ कथा अमृत पद होथु प्रतिष्ठित।' २७

Prof. (Dr) Birendra Jha, Dept. of Maithili, PU